प्रत्यय

प्रत्यय उस भाषिक इकाई को कहते हैं, जिसका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से न हो, और जिसे किसी और भाषिक इकाई के अन्त में जोड़कर शब्द-रचना की जाय। जैसे सुन्दर + ता = सुन्दरता। यहाँ 'ता' प्रत्यय है। हिन्दी में चार प्रकार के प्रत्ययों का प्रयोग होता है—

(क) तत्सम—जैसे ता, आलु, जीवी, इक, ई, शः, अनीय, त, इष्ठ, आ, इमा।

(ख) तद्भव—जैसे आई, आहट, एरा, नी, आइन, आलू आदि।

(ग) देशज—जैसे अक्कड़, अंकू, अड़, आटा आदि।

(घ) विदेशी—जैसे आना, इयत, मंद, ख़ोर आदि।

हिन्दी के व्याकरणों में प्रत्यय के 'कृत' और 'तद्धित' दो वर्ग बनाए गए हैं। वस्तुतः यह वर्गीकरण संस्कृत का है, और हिन्दी पर लागू नहीं होता, क्योंकि ऐसे भी प्रत्यय हैं जो 'कृत्' और 'तद्धित' दोनों ही रूपों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे 'आई'। एक तरफ तो यह धातु में जोड़ा जाता है (सिलाई, खुदाई, लड़ाई, पढ़ाई, चढ़ाई) अतः यह कृत् प्रत्यय है, और दूसरी ओर शब्दों में भी जोड़ा जाता है (खुदाई, कठिनाई, सफ़ाई, चतुराई) अतः यह तद्धित प्रत्यय भी है। वस्तुतः हिन्दी प्रत्ययों के इस प्रकार के वर्गीकरण की कोई उपयोगिता नहीं है।

यहाँ हिन्दी के कुछ मुख्य प्रत्यय दिए जा रहे हैं—

अन्त (किया हुआ)—गढ़न्त, रटन्त।

अक्कड़ (वाला)—घुमक्कड़, पियक्कड़।

आ (स्त्री० प्रत्यय)—माननीया, आदरणीया, प्रिया, सुता।

आई (भाववाचक बनानेवाला प्रत्यय)—पढ़ाई, लिखाई, बुराई, भलाई, कमाई।

आऊ (वाला)—कमाऊ, बिकाऊ, पंडिताऊ, टिकाऊ।

आड़ी (वाला)—खिलाड़ी, जुआड़ी, पिछाड़ी, अगाड़ी, अनाड़ी (?)।

Scanned with OKEN Scanner

आना (परम्परा, दण्ड, प्रति)—जुर्माना, घराना, रोज़ाना, सालाना।
आनी (स्त्री० प्रत्यय)—जेठानी, देवरानी, मास्टरानी, मेहतरानी।
आपा (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—बुढ़ापा, रँड़ापा, मुटापा।
आर (करने वाला)—सुनार, लुहार, कुमार, चमार।
आरी (करने वाला)—पुजारी, भिखारी, जुआरी।
आरू—दुधारू, जुझारू।
आलु (वाला)—दयालु, लज्जालु, श्रद्धालु, कृपालु।
आलू (करने वाला)—झगड़ालू।
आवट (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—मिलावट, बुनावट, बनावट, रुकावट।
आस (इच्छावाचक भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—छपास, लिखास।
आहट (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—घबराहट, भलमनसाहत, चिल्लाहट।
इक (विशेषण का प्रत्यय)—भाषिक, दैविक, सामाजिक, साहित्यिक, व्यावहारिक, वैदिक, नैतिक, भौगोलिक, पौराणिक, (इसे जोड़ने में प्रथम अक्षर (syllable) के अ को आ, इ, ई, ए को ऐ, तथा उ, ऊ, ओ को औ कर देते हैं)। अपवाद—पथिक, क्रमिक, श्रमिक।
इत (युक्त)—पुष्पित, आधारित, पुलकित, हर्षित।
इन (स्त्री० प्रत्यय)—जुलाहिन, साँपिन, जमादारिन, लुहारिन।
इमा (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—महिमा, कालिमा, लालिमा, नीलिमा।
इयत (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—आदमियत, इन्सानियत, असलियत, ख़ासियत।
इयल (वाला)—दढ़ियल, लठियल, मरियल, सड़ियल।
इया 1. (लघुत्व, स्त्रीलिंग)—लुटिया, बुढ़िया, चुहिया, खटिया; 2. (वाला) पुरबिया, कनौजिया, दीवालिया, कलकतिया, बम्बइया, विचौलिया, ब्लैकिया, दूधिया, घुसपैठिया।
इल (वाला)—फेनिल, उर्मिल, जटिल।
ई 1. (स्त्री० प्रत्यय)—घोड़ी, लड़की, नानी, चाची; 2. (वाला)—घमंडी, लालची, ऊनी, सूती, जापानी, राजस्थानी, हिन्दुस्तानी, रूसी; 3. (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—मास्टरी, प्रोफ़ेसरी, अफ़सरी, चौड़ाई, सफ़ेदी, कठिनाई, काहिली; 4. (लघुताबोधक) पहाड़ी, 5. (भाषा-बोधक) जापानी, चीनी।
ईन (वाला)—रंगीन, ग़मगीन।
ईय (वाला)—स्वर्गीय, भारतीय, शासकीय।
ईला (वाला)—सुरीला, पथरीला, चमकीला, ख़र्चीला।
ऊ—चालू, टालू, लागू।
एरा (वाला)—चचेरा, ममेरा, लुटेरा, सँपेरा।
कार 1. (लिखने या बनानेवाला)—साहित्यकार, कहानीकार, नाटककार,

चित्रकार, मूर्तिकार: 2. (वाला) जानकार।

खोर (खानेवाला)—सूदख़ोर, घूसख़ोर, रिश्वतख़ोर, हरामख़ोर।

गी—ज़िंदगी, नामज़दगी, मेहरबानगी।

गर (वाला)—जादूगर, रफ़ूगर, बाज़ीगर।

ची (वाला)—तबलची, तोपची, अफ़ीमची, मशालची, खज़ांची।

ज (जन्मा हुआ)—जलज, पंकज, वारिज, अनुज, अंडज, स्वेदज।

जीवी (जीनेवाला)—दीर्घजीवी, अल्पजीवी, परजीवी, बुद्धिजीवी।

ज्ञ (जाननेवाला)—विशेषज्ञ, मर्मज्ञ, अल्पज्ञ।

तम (सबसे अधिक)—सुन्दरतम, श्रेष्ठतम, उच्चतम।

तर (तुलना में ऊँचा, बड़ा अथवा छोटा आदि)—उच्चतर, गुरुतर, निम्नतर।

तः (क्रियाविशेषण बनाने वाला)— अंशतः, मूलतः, स्वतः, यथार्थतः, सामान्यतः, वस्तुतः।

तया (क्रियाविशेषण बनानेवाला प्रत्यय)—सामान्यतया, मुख्यतया, साधारणतया।

ता (भाववाचक संज्ञा बनानेवाला प्रत्यय)—सुन्दरता, कोमलता, आवश्यकता, प्राचीनता, नवीनता, लघुता, ममता।

त्व (भाव)— ममत्व, कवित्व।

दान (आधार)—इत्रदान, गुलदान, पीकदान, क़लमदान।

दार (वाला)—दूकानदार, ईमानदार, मालदार; ख़ुशबूदार।

नाक (वाला)—ख़तरनाक, ख़ौफ़नाक; दर्दनाक।

पन (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—बचपन, कालापन, पागलपन, बचपना।

बाज़ (वाला)—चालबाज़, पतंगबाज़, मुकदमेबाज़, धोखेबाज़।

मंद (वाला)—अक़लमन्द, दौलतमन्द, ज़रूरतमन्द।

य (भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय)—माहात्म्य, सौंदर्य, काव्य, साहित्य, (इसमें भी 'इक' की तरह आदि वृद्धि होती है।)

वर (वाला)—नामवर।

वान (वाला)—गुणवान, दयावान, धनवान, बलवान।

सार (सा. वाला)—ख़ाकसार, शर्मसार।

प्रत्ययों के अर्थ के संबंध में कहीं विस्तार से विचार हुआ है या नहीं, मैं नहीं कह सकता। यों प्रत्ययों का अर्थ होता है, इसमें संदेह नहीं। वह अर्थ मुख्यतः तो व्याकरणिक होता है। अर्थात् भाववाचक संज्ञा बनाने वाले प्रत्यय भाववाच्यार्थी होते हैं। इसी प्रकार कुछ प्रत्यय विशेषणार्थी तथा कुछ क्रियाविशेषणार्थी होते हैं। कारकरूपार्थी तथा क्रियारूपार्थी प्रत्ययों की बात भी इस प्रसंग में की जा सकती है, हालांकि उन्हें यहाँ न लेकर क्रमशः संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया अध्यायों में यथास्थान लिया गया है।